e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 12, December 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412018 |

शीर्षक :- कोरोना में मीडिया के लिए सबक : दूरदर्शन के कार्यक्रमों के परिप्रेक्ष्य में

डॉक्टर ऋतुराज शर्मा

सीनियर स्पेश्यल रिपोर्टर, फर्स्ट इंडिया न्यूज, फर्स्ट इंडिया इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड, राजस्थान

1.**शोध सारांश**

अस्सी और नब्बे के दशक में भारत में लोकरंजन का एक ही पर्याय था, वह था-दूरदर्शन। समाचारों के जरिये देश- दुनिया की खबर हो या पौराणिक आख्यानों के जरिये हमारे वाङ्मय को टटोलना...सतरंगी भारतीय संस्कृति के दर्शन हों या आम जनता से जुड़ी विसंगतियों से उपजा चुटीला हास्य...। दूरदर्शन इन दशकों में एक से बढ़कर एक लोकरंजन के नए अध्याय लिखता चला गया। इस दौर में अपने कार्यक्रमों के जरिये दूरदर्शन ने भारतीय जनमानस में स्वस्थ और सार्थक मनोरंजन की नींव रखी जिसके जरिये सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में उभरते भारत की एक नई तस्वीर सामने आई और देश के समवेत विकास को नए पंख लगे।

ज्ञान और मनोरंजन का यह अद्भुत और ताजगी भरा वातायन फिर महसूस किया गया...24 मार्च 2020 के लॉकडाउन के बाद। लॉकडाउन के वे दिन जब कामकाज और अन्य कामों के लिए घर से बाहर निकलने पर पाबंदी हो गई थी, तब दूरदर्शन ने रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक आख्यानों से लेकर आधुनिक मनोरंजन के वे दरीचे खोल दिये जिसकी ताजी हवा के झोंके ने चैनल्स की दमघोंटू और कुत्सित होड़ के बीच अद्भुत प्राणवायु दी। काफी मायने में इस प्राणवायु के दम पर भारतीय जनमानस विकराल महामारी के नारकीय दर्द को भुलाकर कुछ हद तक सहज महसूस कर सका।

2.संकेत शब्द

1.दूरदर्शन
2.मनोरंजन
3.लॉकडाउन
4.निजी चैनल्स
5.ज्ञान और मनोरंजन
6.रामायण
7.महाभारत
8.पौराणिक आख्यान

3.**प्रस्तावना**

अभी हालांकि कोरोना काल समाप्त नहीं हुआ है लेकिन बार-बार लॉकडाउन के दिनों को याद करता हूं तो इस बहुत तेज दौड़ते-भागते युग में वह अनुभव मानो परीकथा-सा ही लगने लगता है। क्या किसी ने सोचा था कि बिना कहीं जाए,बिना कुछ किए आराम से टीवी या मनोरंजन के अन्य साधनों से चिपककर बैठे हुए घर-परिवार के साथ आम आदमी जमाने भर के तनाव,दुश्चिंताएँ और तकलीफें भूलकर सुकून और राहत के पल बिता सकेगा। लेकिन कोरोना ने यह कर दिखाया...और इस सुखद अनुभव को एक अद्वितीय,दैवीय,आध्यात्मिक और रूहानी सुकून की ऊंचाइयों तक पहुंचाया...पारंपरिक मनोरंजन के साधन दूरदर्शन ने...।

24 मार्च,2020 के लॉकडाउन के बाद दूरदर्शन ने रामायण,महाभारत,विष्णु पुराण और उपनिषद गंगा के प्रसारण से ज्ञान और मनोरंजन की धारा जो बहाई उसमें निहित आत्मिक रस और एक तरह के अलौकिक आनंद से भारतीय जनमानस तृप्त हो गया।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412018 |

28 मार्च,2020 शनिवार से 1987 के सुपरहिट पौराणिक आख्यान को लेकर बने धारावाहिक रामायण के पुन: प्रसारण की केन्द्रीय सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर की घोषणा के बाद भारतीय जनमानस सुबह 9 से 10 और रात 9 से दस बजे टीवी पर नजरें टिकाए बैठे रहा।*1

निश्चय ही 3 दशकों बाद यह अविस्मरणीय लम्हें वापस लौटे। जाहिर है नई पौध ने तो वाकई देशभर में सड़कें सूनी होने का आलम तब देखा जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे देशभर में 24 मार्च 2020 मध्यरात्रि से लॉकडाउन की घोषणा की लेकिन पुराने समय के लोगों ने अघोषित कर्फ्यू लगने का वह मंजर तब ही देख लिया था जब रामायण का पहली बार दूरदर्शन पर प्रसारण हुआ था। 1987 का यह वह समय था जब रामायण का प्रसारण दूरदर्शन पर होता था और तब भारत की सड़कें बिल्कुल सूनी हो जाती थीं और यह सन्नाटा तब ही समाप्त होता था जब रामायण की एक कड़ी पूरी हो जाती थी।

लॉकडाउन के दिनों में यह एक जादू था जो सिर चढ़कर बोल रहा था...। ऐसा लगता था कि अल्पवेतनभोगी होने के बावजूद बिना हो-हल्ला या हाय-हाय किए तसल्ली से काम करने का,करीने से जिंदगी सजाने का और आराम से गर्मागर्म चाय के प्याले के साथ टीवी देखते रहने का पहले जैसा जमाना लौट आया है। जी हां, हम उस जमाने की बात कर रहे हैं जब दूरदर्शन का वर्चस्व कायम था। उस समय अपनी बादशाहत अनुसार दूरदर्शन ने एक के बाद एक वे मनोरंजक और स्तरीय कार्यक्रम प्रसारित किए कि उनकी छाप दिलोदिमाग से आज तक नहीं छूटती है। हाल ही में जब लॉकडाउन हुआ तो वैसा ही सुखद एहसास होने लगा। कोरोना के चलते मजबूरी में जब लोग सारे काम-धंधे छोड़कर अपने घरों में कैद होने को मजबूर हो गए तब दूरदर्शन ने स्तरीय और गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रमों की अपनी जवाबदेही उसी खूबसूरती से निभाई जैसी वह सत्तर,अस्सी और नब्बे के दशकों में निभाता आया था।

4.शोध प्रश्न

1.आम आदमी की रोजमर्रा की भागदौड़ भरी जिंदगी के बीच सुकून और शांति के पल किस तरह खो गए थे ?

2.स्वस्थ और सार्थक मनोरंजन के लोक कल्याणकारी उद्देश्य को पाने में दूरदर्शन कितना खरा उतर पाया ?

3. लॉकडाउन के दिनों में जब दुनिया थम गई तो दूरसर्शन क्या सामाजिक या सोद्देश्य मनोरंजन की भूमिका निभाने में सफल रहा ?

4.किस तरह मीडिया आम आदमी की आवाज बनने के अपने मूल सामाजिक दायित्व ठीक ढंग से निभा नहीं पाया ?

5. लॉकडाउन के दिनों में फिर क्या सोद्देश्य मनोरंजन या लोकरंजन के मीडिया दायित्व की ओर ध्यान या जरूरत महसूस नहीं कि गई ?

6.क्या दूरदर्शन की लॉकडाउन के दौरान खींची गई सोद्देश्य मनोरंजन के इस लकीर को निकष मानते हुए मीडिया इस पर खरा उतरेगा ?

खबरिया चैनल्स के शोर, आम जिंदगी की भागदौड़ व उथलपुथल और ग्लैमर की अतृप्त-सी चकाचौंध के बीच दूरदर्शन का यह कलेवर लोकरंजन के साथ- साथ आम आदमी की आवाज बनने की सामाजिक भूमिका को भी बताता है।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन के महानिदेशक संजय द्विवेदी पत्रिका संवाद पत्र के अक्टूबर-दिसंबर 2018 के अंक में अपने लेख में लिखते हैं-

"मीडिया दरअसल एक ऐसी ताकत के रूप में उभरा है जो प्रभु वर्गों की वाणी बन रहा है जबकि मीडिया की पारंपरिक संस्कृति और इतिहास इसे आम आदमी की वाणी बनाने की सीख देते हैं। "*2

आम आदमी की वाणी बनने की यह कला ही वास्तव में दूरदर्शन की शक्ति है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412018 |

लॉकडाउन के खाली समय में भारतीय जनमानस रामायण,महाभारत,

चाणक्य,उपनिषद गंगा और विष्णुपुराण के साथ जहां पौराणिक मूल्यों से जुड़ा...वहीं बुनियाद,श्रीकांत जैसे धारावाहिकों के पुनर्प्रसारण ने सोद्देश्य मनोरंजन की कल्पना को फिर साकार किया। वहीं देख भाई देख, इधर-उधर,श्रीमान-श्रीमती जैसे धारावाहिकों के पुनर्प्रसारण ने विनोद और हास- परिहास की क्लासिकल शैली को एक नई अभिव्यक्ति दी। तो शक्तिमान,कानून,ब्योमकेश बख्शी,बैरिस्टर विनोद जैसे धारावाहिकों ने दूरदर्शन के भुलाए जा चुके रूपहले चरित्रों को जीवंत कर दिया।

ब्रॉडकास्ट ऑडियेंस रिसर्च कौंसिल-बार्क की रिपोर्ट अनुसार 3 अप्रैल 2020 को समाप्त हुए सप्ताह में कोरोना वायरस से हुए लॉकडाउन में दूरदर्शन की मनोरंजक कार्यक्रमों की श्रृंखला के चलते वह सबसे ज्यादा देखे जानेवाला चैनल बन गया।

इस रिपोर्ट में इस लॉकडाउन के दौरान दर्शकों में दूरदर्शन के 40000 प्रतिशत तक के इजाफे का अनुमान बताया जबकि इस दौरान निजी चैनल्स भी दर्शक संख्या की नई ऊंचाइयां छू रहे थे।

कौंसिल के अनुसार इसके तहत इस दौरान 3 अप्रैल से पिछले सप्ताह के मुकाबले टीवी देखना 4% बढ़ा था। *3

वहीं 16 अप्रैल 2020 को प्रसारित रामायण के एपिसोड को तो विश्व भर में सबसे ज्यादा लोगों ने देखा था। इस दिन प्रसारित रामायण के एपिसोड को 7.7 करोड लोगों ने देखा जिसके बाद यह सबसे ज्यादा देखे जानेवाला धारावाहिक बन गया।

रामायण में 'राम' का किरदार निभाने वाले कलाकार अरुण गोविल कहते हैं-"रामायण की लोकप्रियता उसका समसामयिक जुड़ाव या 'कंटेम्परेरी रेलिवेन्स' बताती है।" *4

इस दिन रामायण में मेघनाद द्वारा लक्ष्मण को शक्ति बाण मारने के बाद का हिस्सा दिखाया गया था। इसमें विभीषण के कहने पर हनुमान लंका में जाकर वैद्य को बुलाकर लाते हैं और वैद्य के कहने पर संजीवनी बूटी के लिए पूरा पर्वत ही उठा लाते हैं। इसे लेकर रावण और मेघनाद के संवाद को भी दिखाया गया। वहीं 16 अप्रैल 2020 को लक्ष्मण जी के इलाज वाला सीन भी दिखाया गया।

यही नहीं रामायण के बाद रामानंद सागर का करुणा से ओतप्रोत धारावाहिक उत्तर रामायण भी दर्शकों का चहेता बना। दर्शकों के प्यार के चलते यह शो टॉप 5 में भी शामिल हुआ। इस दौरान शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की मिलाकर रेटिंग्स देखी जाए तो टॉप 3 में रामायण, उत्तर रामायण और महाभारत रहे। जाहिर है 28 मार्च से जबसे पहले रामायण और फिर महाभारत का प्रसारण हुआ तबसे काफी समय तक टीआरपी रैंकिंग में दूरदर्शन का ही राज रहा।*5

दूरदर्शन पर रामायण व महाभारत के पुनः प्रसारण के बााा निजी

चैनल्स ने भी अपनी टीआरपी बढ़ाने के लिए इन पौराणिक धारावाहिकों का पुनः प्रसारण किया।

दूरदर्शन के इस प्रदर्शन के चलते क्लासिकल मनोरंजन प्रेमी दर्शकों को भारी नॉस्टेलजिया हो गया और वे स्वर्ण युग को याद करने लगे। जब एक के बाद एक लोकप्रिय धारावाहिकों और मनोरंजक कार्यक्रमों से भारतीय जनमानस तादात्म्य स्थापित करता था। आजादी की जंजीरों से दूर आम भारतीय की अपेक्षा और सपने तब हिरणी कुलांचे भर रही थीं और तब दूरदर्शन ने उसके नए भविष्य और नए भारत के सपने को समेटने वाले जीवन चरित्र को ही छोटे पर्दे पर उतारकर मानो उसके रंगीन सपनों को एक नई दुनिया दे दी थी।

80 और 90 के इस दशक के दौरान जब दूरदर्शन का साम्राज्य था तब उसने एक से एक मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम देखकर चेतनाशील समाज के निर्माण की अपनी महती भूमिका निभाई थी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इस दौरान भारत में 'आधुनिक चेतनाशील और आनंदप्रेमी समाज' का जो स्वरूप निखर रहा है, उसकी नींव दूरदर्शन ने ही रखी थी। दूरदर्शन के प्रभाव को एक नजर में देखें तो निश्चय ही 'ज्ञान और मनोरंजन की जादुई दुनिया' का समाज पर व्यापक प्रभाव का पता चलता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412018 |

दूरदर्शन के विविध विषयों और संदर्भों वाले कार्यक्रमों को सामान्य और विशिष्ट दर्शकों की श्रेणियों वाले दर्शकों के आधार पर दो भागों में बांटा जा सकता है। इसमें समाचार, समसामयिक विषयों पर आधारित कार्यक्रम, टेलीविजन धारावाहिक, टेलीविजन नाटक जैसे रुचि वाले कार्यक्रम पहली श्रेणी में रखे जा सकते हैं। दूसरी श्रेणी में समाज के विशिष्ट तबकों पर केन्द्रित कार्यक्रमों को रखा जा सकता है।

कार्यक्रमों की इन श्रेणियों के केन्द्र में हिंदी फिल्मों के साथ-साथ चित्रहार, छायागीत और फूल खिले हैं गुलशन-गुलशन जैसे फिल्मों पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण किया गया था। इधर द लूसी शो, डीडीज कॉमेडी शो, स्पाइडर मैन, मिकी एंड डोनाल्ड, सुपरमैन, स्टार ट्रेक, लॉरेल एंड हार्डी और चार्ली चैपलिन जैसे बेहद चर्चित कार्यक्रम पेश किए गए। इस समय में लोकप्रिय पाश्चात्य कार्यक्रमों के हिंदीकरण के साथ-साथ उन कार्यक्रमों की तर्ज पर हिंदी धारावाहिकों या सोप ऑपेराज का प्रसारण आम भारतीय जनमानस के मन को खूब भाया।

इस दौरान सांस्कृतिक पत्रिका 'सुरभि' के जरिये 'अनेकता में एकता, है हिंद की विशेषता' के नारे को साकार किया गया तो वहीं 'ऐसा भी होता है' और अन्य साइंस फिक्शन व प्रश्नोत्तरी वाले शो के जरिये विज्ञान के प्रति रुचि जगाने और जागरुकता बढ़ाने में दूरदर्शन ने अहम भूमिका निभाई। इसके तहत कई अंधविश्वासों को वैज्ञानिक तरीके से जिस तरह झुठलाया गया उसने आम लोगों के मन में गहरी छाप छोड़ी।

इस दौरान दूरदर्शन सामाजिक चेतना की भी आवाज बना। 'हम लोग' इस कड़ी में एक मील का पत्थर साबित हुआ। इसके बाद बुनियाद, नुक्कड़, ये जो है जिंदगी, मिस्टर योगी, मिट्टी के रंग, कथासागर, करमचंद, बैरिस्टर विनोद, होनी-अनहोनी,इंतजार, मालगुडी डेज,चुन्नी और रजनी जैसे एक से एक नायाब धारावाहिक पेश किए गए। इसी कड़ी में आईपीएस महिला की कहानी पर आधारित 'उड़ान' ने काफी सुर्खियां बटोरीं। हाल ही में दूरदर्शन ने इसका पुनर्प्रसारण शुरू किया है। इसमें एक बालिका की साधारण लड़की से इंडियन पुलिस अधिकारी बनने की यात्रा बताई गई है। इसमें मुख्य किरदार पुलिस अधिकारी कंचन चौधरी भट्टाचार्य की छोटी बहन कविता चौधरी ने निभाया था जिन्हें इस धारावाहिक के बाद खूब शोहरत मिली और लोग उनकी छवि पूर्व आईपीएस किरण बेदी के रूप में देखने लगे। इस धारावाहिक का पुनर्प्रसारण भी खासा लोकप्रिय हो रहा है। नारी स्वतंत्रता की अलख जगानेवाला दूरदर्शन में पूर्व में प्रसारित ऐसा ही धारावाहिक 'रजनी' था जिसमें कलाकार प्रिया तेंदुलकर का निभाया चरित्र बरबस ही सामाजिक विषमता के खिलाफ नारी के संघर्ष को बताता है।

बहरहाल 80 और 90 के दशक के उस सुनहरे दौर में रामायण,महाभारत, जय हनुमान और कृष्णा जैसे धारावाहिकों के साथ द स्वॉर्ड ऑफ टीपू सुल्तान, शिवाजी, तेनालीरामा,विक्रम और बेताल जैसे पौराणिक-ऐतिहासिक चरित्रों को दूरदर्शन के रूपहले पर्दे पर जीवंत किया गया। इन कार्यक्रमों के चरित्र और चरित्र को निभाने वाले कलाकार भारतीय समाज के मिथक बन गए। इनमें महाभारत में श्रीकृष्ण बने नीतिश भारद्वाज और रामायण में राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल और सीता का किरदार निभाने वाली दीपिका को पूजा जाने लगा।

दूसरी ओर दूरदर्शन ने परीलोक और तिलिस्मी व दैवीय शक्तियों से भरपूर कार्यक्रमों के प्रसारण से भी प्रसिद्धि पाई। इनमें से एक धारावाहिक चंद्रकांता और अलिफ लैला भी शामिल हैं। इनमें अलिफ लैला का दूरदर्शन पर फिर प्रसारण किया जा रहा है।

आधुनिक समय में नब्बे के दशक और उसके बाद का समय भी काफी अहम रहा। इस दौरान निजी चैनल्स की शुरुआत और उनके बढ़ते प्रभाव के बीच दूरदर्शन ने 'जुनून' और 'शांति' जैसे सोप ऑपेराज शुरू किए। इसी कड़ी में रंगोली,ऑल द बेस्ट और सुपरहिट मुकाबला जैसे फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम नए कलेवर के साथ प्रस्तुत किए गए। आम लोगों में पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते रुझान को देखते हुए इस दौरान अंग्रेजी फिल्मों और कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया गया। तब क्रिकेट के प्रभाव के चलते विश्व कप 1987 और अन्य अहम वन डे क्रिकेट सीरिज का प्रसारण किया गया। साथ ही विंबलडन,ऑस्ट्रेलियाई,फ्रेंच ओपन और अन्य टेनिस और अन्य खेलों की प्रतियोगिताओं का रोमांच भी दूरदर्शन में ही शुरुआत में देखा गया।

ऐसा नहीं है कि इसके बाद दूरदर्शन में स्तरीय कार्यक्रम प्रसारित होने बंद हो गए लेकिन इसके बाद केबल और फिर सैटेलाइट टीवी की बरबस छाई चमक-दमक के आगे दूरदर्शन के खामोश-से लगने वाले कलात्मक मनोरंजन को लोग बिसराने लगे। अलबत्ता क्रिकेट मैच के खास प्रसारण, कभी पुरानी हिंदी फिल्में और कभी किसी खास

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412018 |

धार्मिक- आध्यात्मिक और साहित्यिक-सांस्कृतिक तुष्टि के लिए एक खास वर्ग रिमोट को दूरदर्शन 'मॉड' पर ले जाता था। इस दौरान दूरदर्शन ने अपनी क्षमता में अद्वितीय वृद्धि कर ली।

अब 7 ऑल इंडिया चैनल्स,बीस 24*7 क्षेत्रीय चैनल्स, आठ नॉन 24*7 क्षेत्रीय चैनल्स और 1 अंतरराष्ट्रीय चैनल सहित दूरदर्शन के 36 सैटेलाइट चैनल्स हैं। *6

दूरदर्शन की 1 मई 2020 को अपडेटेड सूची अनुसार-

दूरदर्शन के 7 ऑल इंडिया चैनल्स

1. डीडी नेशनल

2. डीडी न्यूज

3.डीडी स्पोर्ट्स

4.डीडी भारती

5.डीडी उर्दू

6.डीडी किसान

7. डीडी रेट्रो

बीस 24*7 क्षेत्रीय चैनल्स

1. डीडी मलयालम

2.डीडी चंदना

3. डीडी यादगिरी

4.डीडी पोधिगई

5.डीडी सहयाद्रि

6.डीडी गिरनार

7.डीडी उड़िया

8.डीडी काश्मीर

9.डीडी नॉर्थ ईस्ट

10.डीडी बांग्ला

11.डीडी पंजाबी

12.डीडी राजस्थान

13.डीडी बिहार

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412018 |

14.डीडी उत्तरप्रदेश

15.डीडी मध्यप्रदेश

16.डीडी सप्तगिरी

17.डीडी अरुणप्रभा

18.डीडी उत्तराखंड

19.डीडी झारखंड

20.डीडी छत्तीसगढ़

नॉन 24*7 रीजनल चैनल्स

1.डीडी हिमाचल प्रदेश

2.डीडी हरियाणा

3.डीडी त्रिपुरा

4.डीडी मिजोरम

5.डीडी मेघालय

6.डीडी मणिपुर

7.डीडी नगालैण्ड

8.डीडी गोवा

अंतरराष्ट्रीय चैनल्स

1. डीडी इंडिया

यही नहीं ऑल इंडिया रेडियो के छोटे ऑफिस से शुरू हुआ दूरदर्शन का सफर अब देशभर में उसके करीब 66 स्टूडियो तक जा पहुंचा है जिसमें वे 17 बड़े स्टूडियो शामिल हैं जो राज्यों की राजधानियों में हैं जबकि 49 अन्य स्टूडियो विभिन्न शहरों में स्थित हैं। *7

6.शोध प्रविधि

इस शोध में लॉकडाउन के दौरान नियमित रूप से टेलीविजन के प्रेक्षण को सबसे अहम प्रविधि को रखा है।
इस प्रविधि के जरिये नियमित विश्लेषणात्मक प्रविधि को रखा गया है।
इसके साथ ही संगोष्ठियों में महानुभावों और विद्वानों के संबोधन को उद्धरण के रूप में उपयोग किया गया।
साथ ही आधुनिक समय में सोश्यल मीडिया की अहमियत के मद्देनजर ट्विटर में विशिष्ट व्यक्तियों के किये गए ट्वीट को अहम संदर्भ के रूप में काम में लिया गया है। वहीं इसी के मद्देनजर मान्यता प्राप्त समाचार पत्रों की

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412018 |

वेबसाइट्स में विषय से जुड़े आलेख या न्यूज स्टोरी को प्रमुख स्थान दिया गया है। समाचार पत्रों, दूरदर्शन की वेबसाइट के लगातार प्रेक्षण से उपजे विश्लेषणात्मक नजरिये को सामने रखकर आकलन किया गया है।
इस शोध पत्र के अन्य संदर्भों में मान्यता प्राप्त पत्रिका 'संवाद पथ' के आलेख और उसमें शामिल चिंतन बिंदुओं को शोध के निकष पर रखा गया। इन चिंतन बिंदुओं पर नियमित रूप से संवाद और उसके वैज्ञानिक लिहाज से परख भी शोध की प्रमुख तकनीक के रूप में रखा गया है।
इस शोध के सबसे अहम संदर्भों में आई बार्क की रिपोर्ट को रखा गया जिसमें टीआरपी रेटिंग्स से जुड़े तथ्यों को बताकर विश्लेषणात्मक और गवेषणात्मक तकनीक को आजमाया गया है।

7.सारांश

दरअसल कोरोना काल में दूरदर्शन की बढ़ी लोकप्रियता ने फिर मीडिया के सोद्देश्य मनोरंजन के बिसरे सामाजिक भूमिका के दायित्व की ओर ध्यान खींचा है। इसने बताया है कि कैसे अंधाधुंध ग्लैमर और चकाचौंध और व्यावसायिकता की अंधी दौड़ से शामिल हुए बिना चैनल्स अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के साथ-साथ सामाजिक कल्याण की अपनी भूमिका को कैसे निभा सकते हैं ? साथ ही सार्थक और उदात्त लोकरंजन की भारतीय लोकसंस्कृति की परंपरा सार्थक रूप से कैसे आगे बढ़ सकती है, यह भी कोरोना के इस दौर में सबक मिला है।
बहरहाल लॉकडाउन के दौरान और उसके बाद निश्चय ही भारतीय जनमानस ने दूरदर्शन की ओर फिर रुख किया है। ऐसे में अब उसे इस बढ़त को कायम करते हुए एक से एक स्तरीय,कलात्मक और गुणवत्तायुक्त कार्यक्रमों का प्रसारण करके सोद्देश्य मनोरंजन के अपने मूलमंत्र के जरिये भारतीय जनमानस में पैठ जमानी होगी। वहीं निजी न्यूज चैनल्स को इस व्यावसायिकता भरी भागदौड़ के बीच इन क्लासिकल कार्यक्रमों की मूल थीम को नए समसामयिक व प्रासंगिक तरीके से उभारकर मनोरंजन के आयाम बदलने होंगे जिससे वे भारतोय जनमानस में विश्वसनीयता की पैठ कायम रखी जा सके।

-लेखक रीजनल न्यूज चैनल में वरिष्ठ संवाददाता हैं।

8. संदर्भ सूची

*1 केन्द्रीय सूचना-प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर का 27 मार्च 2020 को किया गया ट्वीट जिसमें उन्होंने जनता की बेहद मांग पर रामायण का पुन: प्रसारण 28 मार्च 2020 से करने की घोषणा की थी।

*2-पत्रिका 'संवाद पथ' के अक्टूबर-दिसंबर 2018 के अंक में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन के महानिदेशक संजय द्विवेदी के आलेख "लोक, बाजार और मीडिया 'लोक' को संरक्षित करने से ही बचेगा भारत " से उद्धृत अंश।

*3- तीन अप्रैल 2020 को आई बार्क की रिपोर्ट जिससे चैनल्स के दर्शकों का अंदाजा लगता है।

*4 -समाचार पत्र 'हिंदू' की वेबसाइट में 9 अप्रैल 2020 को दोपहर 3.46 बजे अपलोड और दस अप्रैल 2020 को अपडेटेड आलेख "दूरदर्शन हाइयेस्ट वाच्ड चैनल इन इंडिया ड्यूरिंग वीक एंडेड अप्रैल 3 : बार्क" से लिया गया उद्धरण।

*5-अप्रैल 2020 के दैनिक जागरण के एक अंक में प्रकाशित आलेख-

"16अप्रैल को रामायण में क्या दिखाया गया, जिसे दुनिया में सबसे ज्यादा 7.7 करोड लोगों ने देखा" से उद्धृत अंश।

*6 दूरदर्शन की वेबसाइट-https://doordarshan.gov.in/doordarshan-network पर दर्ज जानकारी से लिया अंश।

*7 प्रसार भारती की वेबसाइट में दर्ज जानकारी।

लिंक-http:/prasarbharti.gov.in/DD/aboutdd.php

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com